।।श्री राधा।।

श्री कृष्णजन्माष्टमी

दिनांक १९ अगस्त २०२२

।।श्री राधा।।

श्री कृष्णजन्माष्टमी (2022)

कृष्ण मनमोहना चित्तचोरा राधा जीवना।
वृन्दावन संचारी गोवर्धन गिरधारी, राधामना हरि नारायणा।।

.....

आठों भादौं की आधीराति।
जनम लियौ जगदीस मधुपुरी जग में जादों जाति।।
बालक बदन देवकी देख्यौ उठि धाई अकुलात।
ऐसौ अद्‌भुत रूप चतुर्भुज देख्यौ वसुदेव तात।।
तेजोमय वपु धरयौ मनोहर चितवत चितयौ न जात।
'परमानंददास' कौ ठाकुर नैननि ही मुसिक्यात।।

भावार्थ *- भादों मास की अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि में जगदीश्वर ने मथुरापुरी में यादव कुल में जन्म लिया। प्रभु को बालक रूप में देखकर माता देवकी अकुलाकर उठ बैठीं। चतुर्भुज रूप देखकर पिता वसुदेवजी विस्मित हो गये। भगवान् का शरीर तेजपूर्ण व अत्यन्त मनोहर है, जिसको देखकर चित्त को चेत नहीं होता। माता-पिता को इस प्रकार अचम्भित नेत्रों से निहारते देखकर श्यामसुन्दर के होठों पर मधुर मुस्कान छा गयी।*

.....

उदय हो गये जैसे घर में कोटि-कोटि नीले शरदिन्दु।
देख नंदरानी के उर में उमड़ा दिव्य सुखामृत-सिन्धु।।
कैसी अतुलनीय सुन्दरता! कैसा सुर-मुनि-मोहन रूप।
कैसी निकल रही सुषमा-आभा नख-सिख से परम अनूप।।

भावार्थ *- भगवान् श्रीकृष्ण के प्रकट होने से ऐसा मालूम होता था मानो कोटि-कोटि नील चन्द्रमा एक साथ प्रकाशित हो उठे हों। शिशु का परम मनोहारी रूप निहारते ही माता यशोदा का स्नेहरस उमड़ पड़ा। ऐसी सुन्दरता थी उनके रूप में जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। देवता व मुनियों के मन को भी मोहित कर देने वाला सौन्दर्य था। उनके प्रत्येक अंग से दिव्य अनुपम किरणें निकल रही थीं।*

.....

बालमुकुन्दा जय नंदलाला कृष्ण कन्हैया जय गोपाला

.....

बधैया बाजे हो आँगने में।
चुद्रमुखी मृगनयनी ब्रज की तान तोरे हो रागने में।।
न्यौछावर यशोदा के लला की, नहीं कोई लाजन हो माँगने में।।
सिया अलि यह कौतुक देखत, रजनी बीती हो नाचने में, हो गायने में।।
बधाई है, बधाई है, यशोदा ने लाला जायो है, सबने खुशी मनाई है,
सब बधाइ माँगन आई हैं।।

भावार्थ *- भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म से सम्पूर्ण गोकुल में आनन्द छाया हुआ है। नन्दबाबा के आँगन में बधाई गान हो रहा है। बड़े-बड़े नेत्र व सुन्दर मुख वाली ब्रज की गोपियाँ अत्यन्त मनोहारी राग अलाप रही हैं। सभी यशोदा के लाला पर न्यौछावर जा रहे हैं और लाज छोड़कर उनसे बधाई माँग रहे हैं। सम्पूर्ण रात्रि नाचने गाने में ही व्यतीत हो गयी। यह कौतुक देखकर सियाली जी बलिहारी जा रहे हैं।*

.....

हुआ आनन्द गोकुल में बधाई, है बधाई है
गोपियाँ मगन हवै दौड़ी बधाई, है बधाई है।
अरे लुटा दो वस्त्र मणि माणिक नंदजू मगन हो मन में
और देव सब सुमन बरसाते बधाई, है बधाई है।।
अरे ये गोपियाँ गीत गाती हैं नाचत ग्वाल बाल ताली दे
और गुणी जन मिलके गाते हैं बधाई, है बधाई है।।

भावार्थ *- गोकुल में आनन्दित हो सब बधाई दे रहे हैं। भगवान् श्रीकृष्ण के रूप पर मोहित हो गोपियाँ दौड़ी आ रही हैं। नंदबाबा आनन्दित हो वस्त्र, मणि व माणिक्य लुटा रहे हैं। देवता पुष्प बरसाकर बधाईगान कर रहे हैं। ब्रज की गोपियाँ मधुर गीत गा रही हैं और ग्वाल-बाल ताली बजा-बजाकर नृत्य कर रहे हैं। गुणीजन मिलकर बधाई गान कर रहे हैं।*

.....

नंद घर बाजै बधैया।
कहँवा कन्हैया को जनम भयो है, कहँवा बाजे हो बधैया।।
मथुरा कन्हैया को जनम भयो है, गोकुला बाजें हो बधैया।।
बारह जोड़ी नगाड़ा बाजे, सोरह जोरी शहनैया।।
रानी जशोदा मुदित भई अति, अन्न धन देत लुटईया।।

भावार्थ *- नंदबाबा का घर बधाई से गूँज उठा है, यद्यपि कन्हैया का जन्म मथुरा में हुआ परन्तु गोकुल में बधाई बज उठी है। बारह जोड़ी तो नगाड़ा बज रहे हैं और सोलह जोड़ी शहनाई की। यशोदारानी अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर अन्न-धन लुटा रही हैं।*

.....

सब मिल ग्वालन देत असीस।
नंदराय नंदरानी ढोटा चिर जियो कोटि बरीस।।
धन्य यह कूँख भई सुभ लच्छन जिहि सगरो ब्रज जायो।
एसो पुत्र जायो नंदरानी जिन कर अटल बसायो।।
बेगि बढ़ो तुम्हारो गृह आंगन ठुम ठुम खेलत डोले।
श्री विट्ठल गिरिधरन रानीसों मैया कहि कहि बोले।।

भावार्थ *- ब्रज की सब गोपियाँ व ग्वालिन मिलकर आशीर्वाद दे रही हैं। नंदबाबा व नंदरानी का पुत्र चिरंजीवी हो। वह कोख धन्य है जिससे शुभ लक्षणों से युक्त ऐसे पुत्र का जन्म हुआ जो समस्त ब्रज का जीवन-धन है। वे नंदरानी से कहती हैं कि तुम्हारा पुत्र जल्दी बड़ा हो और तुम्हारे आँगन में ठुमक-ठुमक कर डोलते हुए खेले तथा मैया कह-कह कर तुम्हारे पुकारे।*

.....

रानी तेरो चिर जियो गोपाल।
बेगि बडो बढि होय बिरध लट महरि मनोहर बाल।।
उपजि पर्यो यह कूख भाग्यबल समुद्र सीप ज्यों लाल।
सब गोकुल को प्रान जीवन धन वैरिनके उर साल।।
सूर कितो जिय सुख पावतहें निरखत श्यामतमाल।
रज आरज लागो मेरी अखियन रोग दोष जंजाल।।

भावार्थ *- हे रानी! तुम्हारा पुत्र गोपाल चिरंजीवी हो। तुम्हारा मनोहरलाल जल्दी से बढ़कर तंदरुस्त हो। तुम अत्यन्त भाग्यशाली हो जो यह तुम्हारी कोख से उपजा है, जिस प्रकार समुद्र के गर्भ से मूंगा-मणि प्राप्त होती है। ये समस्त गोकुल का प्राण व जीवन-धन है तथा वैरियों के हृदय को पीड़ा पहुँचाने वाला है। सूरदास जी कहते हैं कि यह सुख ब्रज के अतिरिक्त और कहाँ मिल सकता है, जहाँ नित्य निरन्तर श्याम-तमाल के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि इस बालक की चरण-रज उनके नेत्रों में लग जाये जिससे रोग व दोष रूपी जंजालों से पूर्ण इस संसार सागर से वे मुक्त हो सकें।*

.....

आरती बाल कृष्ण की

आरती बालकृष्ण की कीजै, तन मन धन न्यौछावर कीजै।
श्री जसुदा कौ परम दुलारौ बाबा की आँखन कौ तारौ।
गोपिन के प्राणन कौ प्यारौ, इन पै प्राण निछावर कीजै।।आ।।
बलदाऊ को छोटो भइया, कनुवाँ कहि कहि बोलत मैया।
परम मुदित मन लेत बलैया, अपनौ सरबस इनकूँ दीजै।।आ।।
श्री राधावर सुधर कन्हैया, बृज जनकौ नवनीत खवैया।
देखत ही मन लेत चुरैया, यह छबि नैनन में भर लीजै।।आ।।
तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन संग खेलत सुख पावै।
सोई सुकृति जो इनको ध्यावै, अब इनकूँ अपनौ कर लीजै।।आ।।

.....

"गोविन्द गोविन्द गोपाल नन्दलाल कृष्ण"

यह तुमसों माँगो गिरिराई।
जनमहीं जनम तरहटी बसिबौ ब्रजरज तजि जिय अनत न जाई।।
हरि सेवारस पान करों अरु श्रीभगवत रसना मुख गाई।
रसिकदास यह जनकी प्रतिज्ञा श्रीबल्लभकुल नित सिर नाई।।

मैं आपसे यह माँगता हूँ, हे गिरिराज जी! जन्म-जन्म में आपके तरेटी में रहूँ, ब्रजरज छोड़कर मेरा मन कभी भी कहीं ओर न जाये। हाथों से श्रीहरि की सेवा करूँ और मुख से श्रीभगवत् गुण अनुवाद करूँ। श्रीरसिकदास जी की यह प्रतिज्ञा है कि श्रीहरि के भक्तों के प्रति नित्य ही अपना शीश झुकाकर रखेंगे।

यह छबि मोपै जात न बरनी।
गोवर्धन के आस-पास नव फूलिरही है अरनी।।
मदन मोहनपिय खेलन निकसे सँग राधा मनहरनी।
श्रीविट्ठल गिरिधर पद परसत धनि-धनि ब्रज की धरनी।।

इस छवि का वर्णन मुझसे हो ही नहीं पा रहा है। श्रीवृन्दावन के आस-पास का सारा वन फूलों से भरा है। मनमोहिनी श्रीराधा के साथ श्रीकृष्ण खेलने को निकले। श्रीविट्ठलजी कहते हैं कि यह ब्रज की भूमि धन्य है जो श्रीयुगल के चरण-कमलों का स्पर्श प्राप्त करती रहती है।

डगर चल गोवर्धन की ओर।
खेलत बीच मिलेंगे मोहन नागर नंदकिशोर।।
ठौर ठौर प्रफुल्लित द्रुमबेली जहाँ बोलत नव मोर।
परमानंदस्वामी के ऊपर वारत कंचन खोर।।

श्रीवृन्दावन को जाने वाली डगर पर चलो। निश्चित रूप से उसी डगर पर श्रीनन्दकिशोर खेलते हुए मिलेंगे। जगह-जगह उत्फुल्ल पेड़ और बल्लरियाँ हैं और नवीन मोर बोलते रहते हैं। श्रीपरमानंददास जी कहते हैं कि इस डगर पर मैं सोने की जितनी सड़कें हैं उनको वार सकता हूँ।

.....